# वैश्वीकरण और भारत की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था

–डॉ. विनी

वैश्वीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया में बड़ा उथल-पुथल मचा हुआ है। ऐंथनी गिडेन्स ने कहा ''आज सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सम्बन्ध ऐसे हैं जो राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर देशों के बीच की दशाओं और भाग्य को निर्धारित करते हैं।'' दुनिया की इस बढ़ती हुई आत्म-निर्भरता को ही वैश्वीकरण कहा जा सकता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में सम्पूर्ण दुनिया के हस्तक्षेप को आज सहज ही स्वीकार किया जा रहा है। आज पूरा विश्व वैश्वीकरण के दौर में पल रहा है।

गाँधीजी का इस सन्दर्भ में मन्तव्य था कि ''मैं नहीं चाहता कि मेरा मकान चारों ओर दीवारों से घिरा हो और मेरी खिड़कियाँ बन्द हों। मैं तो चाहता हूँ कि सभी देशों की संस्कृतियों की हवाएँ मेरे घर में जितनी भी आजादी से बह सके, बहें, लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि उनमें से कोई भी हवा मुझे मेरी जड़ों से उखाड़ दें।''

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की उक्ति आज भी प्रासंगिक है–

''जहाँ न हो मन में कोई भय
ऊँचा उठा रहे अपना सिर
जहाँ ज्ञान हो मुक्त
घरों की संकरी दीवारें न बाँटती हो दुनिया को
जहाँ शब्द सच की गहराई से आते हों
श्रम अनथक पूर्ण प्राप्ति को बढ़ता हो बाहें फैलाये
जहाँ न खो जाये विवेक निर्मल धारा
मुर्दा आचारों की सूची मरु रेती में
जहाँ हे पिता तुम ले जाओ मन को आगे
अविटत व्यापक होते चिन्तन और कर्म में
मेरा देश वहीं जागे, उस मुक्ति-स्वर्ग में''

वैश्वीकरण की अवधारणा वर्तमान में पुष्पित-पल्लवित हो रही है परन्तु रवीन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गाँधी ने इसकी विचारधारा को 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में ही विश्व विकास के लिए महत्वपूर्ण मान लिया था।

प्रजातन्त्र का विकास पश्चिम के आर्थिक रूप से विकसित क्षेत्रों में हुआ। भारत सहित एशिया में प्रजातन्त्र के स्वरूप को पश्चिमी उदार प्रजातान्त्रिक मानदण्डों पर नहीं तौला जाना चाहिए। एशिया में प्रजातन्त्र से सम्बन्धित प्रयोग अभी चल रहे हैं। पश्चिमी देशों में प्रजातन्त्र को देखे तो वहाँ बहुत सी समस्याएँ चल रही हैं, हम उनकी नकल नहीं कर सकते।

भारत में प्रजातान्त्रिक प्रक्रिया अपने तरीके से चल रही है, जबकि जापान, कोरिया आदि देशों में अपने तरीके चल रहे हैं। देखा जाए तो चीन में भी अपने तरीके से प्रजातान्त्रिक व्यवस्था विकसित हो रही है।

इतिहास साक्षी है कि प्रजातन्त्र विकसित देशों में ही फल-फूल रहा है। पश्चिमी राष्ट्र प्रारम्भ से विश्व बाजार में कार्यशील रहे हैं। भारत में प्रजातन्त्र उस समय आया जब अर्थव्यवस्था काफी अविकसित थी। इसलिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत की स्थिति प्रजातन्त्र को अपनाने के लिए उपयुक्त नहीं थी। फिर भी भारत ने प्रजातान्त्रिक संसदीय प्रणाली को अपनाया और इसे सुचारू रूप से चलाने का कठिन कार्य भी किया।

भारत की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था ने पिछले 60 वर्षों के दौरान अनेक सफलताएँ प्राप्त की हैं। भारत में प्रजातन्त्र ने पूर्णता भले ही प्राप्त न की हो लेकिन यहाँ प्रजातन्त्र का स्वरूप उत्कृष्ट है।

1. भारत में कभी भी सैन्य शासन या तानाशाही स्थापित नहीं हुई, बस एक बार कुछ दिनों के लिए देश में आपातकालीन शासन जरूर लागू हुआ था।
2. अमेरिकी प्रजातन्त्र विश्व का सबसे पुराना प्रजातन्त्र भले ही हो लेकिन भारतीय प्रजातन्त्र तो विश्व में अनोखा सिद्ध हुआ है। भारतीय प्रजातन्त्र में निम्नतर साक्षरता स्तर के साथ-साथ, विविध धर्म, संस्कृतियाँ, जातियों व क्षेत्रीयताओं को समाये रखे हुए हैं। ऐसा कार्य एक परिपक्व प्रजातान्त्रिक व्यवस्था ही कर सकती है।

---

**व्याख्याता, राजनीति विज्ञान, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान मानित विश्वविद्यालय, त्रिवेणी नगर**

3. अमेरिका जो विश्व की एकमात्र सर्वोच्च शक्ति है, ने स्वीकार किया है कि उसने बहुत दिनों तक भारत के महत्व को नहीं समझा। अब अमेरिका भारत के हर क्षेत्र में सहयोग के लिए इच्छुक है। उसने आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक सम्बन्धों के साथ-साथ भारतीय अमेरिकी असैनिक परमाणु समझौता को भी मान लिया है।
4. भारत ने अपने प्रजातान्त्रिक विकास में सम्पत्ति पुनर्वितरण एवं समाजवाद को लेकर अनेक प्रयोग किये हैं। समाजवादी प्रयोग जब अपनी चरम सीमा पर था, उस समय भारत में निजी उद्योग पीछे नहीं थे। अब तो वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के इस युग में निजी क्षेत्र काफी तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। आज भारत विश्व के सबसे बड़े उद्यमी व्यवसायियों का घर भी बन बैठा है।

   इन्हीं दिनों में 25 जून 2006 को मित्तल स्टील ने आर्सेलर पर 31 जनवरी, 2007 को कोरस पर टाटा ने 11 फरवरी, 2007 को हिण्डाससको ने नोकोलिस पर अधिकार स्थापित किया है।
5. भारत में प्रजातन्त्र तब आया जब उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर थी। सभी कठिनाइयों का सामना करते हुए भारतीय प्रजातन्त्र चलता रहा और आज विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था में से एक है।
6. भारत में मतदाताओं की विशाल संख्या भौगोलिक भिन्नाओं के चलते निर्वाचन कार्य काफी खर्चीला है फिर भी भारत 6 दशकों से बखूबी इस प्रजातान्त्रिक प्रणाली को निभा रहा है जबकि पड़ोसी देश या तो बुरी तरह विफल रहे हैं या तानाशाही शासन के अधीन चले गये हैं।
7. भारत की समस्याएँ यूरोपीय देशों से ज्यादा विविधता लिए हुए हैं। इस विविधता के होते हुए भी भारत ने 'जेनेरल एग्रीमेण्ट ऑन ट्रेड एण्ड ट्रेफिक' के नियमों का अनुपालन किया तथा विश्व के वायदों को अत्यन्त कठिन बौद्धिक सम्पदा कानून बनाकर पूर्ण किया है।
8. अमेरिका, रूस व चीन के बाद भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा वैज्ञानिक समुदाय है। SRE-1 की ऐतिहासिक सफल घर वापसी के बाद भारत अन्तरिक्ष की ऊँची उड़ान में अमेरिका, रूस, चीन के बाद चौथा पायदान पर आ पहुँचा है।
9. आज भारतीय प्रजातन्त्र पर अनेक भारतीयों को गर्व है। यहाँ विकसित इन्फ्रास्ट्रक्चर, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की बाढ़, खाद्य पदार्थों की समुचित उपलब्धि के साथ ही आटोमोटिव के अनुपम विकास को देखा जा सकता है।
10. जनता अपनी समस्याओं को अधिकारियों के समक्ष रखने से हिचकिचाती नहीं है। सूचना के अधिकार जनता को प्राप्त हैं।
11. दूसरे राष्ट्रकुल देशों की तरह ही भारत में भी राष्ट्रीय न्यायिक परिषद का गठन किया गया है जो जनता का शासन प्राप्त करने का लक्ष्य सम्भव बनाएगी। यह परिषद न्यायपालिका से जुड़े भ्रष्टाचार के मामलों की पारदर्शिता से जाँच करेगी। ऐसी व्यवस्था न्यूजीलैण्ड में भी है और कनाडा में 1971 से है।

वैश्वीकरण के युग में प्रत्येक व्यक्ति आलोचक बन बैठा है यों ही आलोचना करते रहना वह अपना अधिकार समझता है वह कभी भी समस्याओं की तह में जाकर उनके कारणों और उनके निदान ढूंढ़ने पर अपने को केन्द्रित नहीं करता। राजनैतिक हर दिन प्रतिदिन अपना राष्ट्रीय महत्व खोते जा रहे हैं और क्षेत्रीयता को अपना आधार बना रहे हैं। जाति, धर्म, क्षेत्रियता तथा साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर उन पर आधारित राजनीतिक दल बनाए जा रहे है जो पूर्णत: व्यक्ति-परक होते हैं। ये क्षेत्रीय दल के नेता जेबी-संस्था के रूप में काम करते हैं। ये राजनेता, इसी जेबी-संस्था के बल पर अपने तथा अपने परिवार के लिए धन बटोरते हैं, सरकारी धन का गबन करते हैं, राजनेता-अधिकारी-अपराधी की तिकड़ी सजाते हैं। भारत में आज जरूरी है कि क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को समाप्त कर दिया जाए तथा राष्ट्रीय दलों की परम्परा को प्रोत्साहित किया जाए। एक त्रि-दलीय परम्परा विकसित हो जिसका आधार राष्ट्रीय हितों पर केन्द्रित सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक कार्यक्रम हो।

इस वैश्वीकरण व्यवस्था में भारतीय प्रजातन्त्र बहुत आगे बढ़ गया है इसे चलना है। प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि यह कितनी असफलता प्राप्त रहा है बल्कि यह होना चाहिए कि इसे सबल और सफल बनाने के लिए हम कौन-कौन से उपाय या तरीके अपनाये।